"शब्द शक्ति"

⇒ शब्द-शक्ति का अर्थ - 'शब्द की अभिव्यंजक शक्ति'
(प्रकट करनेवाला)

परिभाषा :- शब्द में निहित अर्थ को प्रकट करने वाले व्यापार को शब्द शक्ति कहा जाता है।

- "शब्दों में ~~अनि~~ अन्तर्निहित अर्थ को प्रकट करने वाले व्यापार को शब्द शक्ति कहते है।" - भट्टनायक

- वाक्य में प्रयुक्त शब्दों का अर्थ जानने के लिए बुद्धि द्वारा जिस शक्ति का प्रयोग होता है, उसे शब्द-शक्ति या शब्द-वृत्ति कहते है।

शब्द शक्ति के प्रकार :- शब्द शक्ति के तीन प्रकार होते है-

(1) वाचक :- जिस शब्द से मुख्य अर्थ निकलता है, उसे वाचक कहते है। वाचक शब्द से निकलने वाला अर्थ वाच्यार्थ या मुख्यार्थ कहलाता है।

(2) लक्षक :- जिस शब्द से ~~लक्ष्यार्थ~~ अर्थात् मुख्यार्थ से भिन्न परन्तु उससे संबंधित अन्य अर्थ निकलता है, उसे लक्षक शब्द कहते है। (लक्ष्यार्थ)

(3) व्यंजक :- जिस शब्द से वाच्यार्थ एवं लक्ष्यार्थ से विशिष्ट व्यंग्यार्थ निकलता है, उसे व्यंजक शब्द कहते है

youtube- Chalia Smart Study
By Chalia Sir

⇒ शब्द-शक्ति का महत्व :- किसी शब्द का महत्व उसमें निहित अर्थ पर निर्भर होता है। बिना अर्थ के शब्द अस्तित्व-विहीन एवं निरर्थक होता है। शब्द-शक्ति के शब्द में निहित इसी अर्थ की शक्ति पर विचार किया जाता है। काव्य में प्रयुक्त शब्दों के अर्थ ग्रहण से ही काव्य आनन्ददायक बनता है। अतः शब्द के अर्थ को समझना ही काव्य के आनन्द को प्राप्त करने की ~~प्रधानता~~ प्रधान सीढ़ी है और शब्द के अर्थ को समझने के लिए शब्द-शक्तियों की जानकारी होना परम आवश्यक है।

⇒ शब्द-शक्ति के भेद -

(1) अभिधा :- शब्द की वह शक्ति जिससे वाच्यार्थ प्रकट होता है।

(2) लक्षणा :- शब्द की वह शक्ति जिससे लक्ष्यार्थ प्रकट होता है।

(3) व्यंजना :- शब्द की वह शक्ति जिससे व्यंग्यार्थ प्रकट होता है।

"(1) अभिधा शब्द शक्ति"

- जिस ~~शक्ति~~ शक्ति के द्वारा साक्षात संकेतित अर्थ का बोध होता है, उसे अभिधा शब्द शक्ति कहते हैं।

- वाक्य या कविता में प्रयोग किये जाने पर जब कोई शब्द अपने मुख्य अर्थ, लोकप्रचलित अर्थ, शब्दकोशीय अर्थ, साक्षात संकेतित अर्थ को प्रकट करता है तो उसे वाचक शब्द कहते है, उसके द्वारा प्रकट करने वाले अर्थ को वाच्यार्थ कहते है, उसे शब्द शक्ति को अभिधा शब्द शक्ति कहते है।

(शब्द :- वाचक) (अर्थ :- वाच्यार्थ, मुख्यार्थ, सांकेतित अर्थ)

Youtube - Chalia Smart Study

⇒ अभिधा शब्द शक्ति के भेद :- 3 (वाचक शब्द तीन प्रकार)

(1) रूढ़ शब्द :- वे शब्द जो एक हो तथा अर्थ भी एक ही हो - संधि, समास, उपसर्ग, प्रत्यय) के आधार पर टुकड़े न हो - दिन, दिवस, धूप, पहाड़, घोड़ा, मुँह, जल, ठण्डा, गाय। पेड़, पशु, घर

(2) यौगिक शब्द :- जो शब्द प्रकृति और प्रत्यय के योग से निर्मित हो यानि दो शब्द, किन्तु तीसरा अर्थ न निकले यौगिक शब्द कहलाते है। जैसे :- विद्यालय, रसोईघर, पुस्तकालय

(3) यौगरूढ़ शब्द :- वे शब्द जो किसी तीसरे अर्थ के लिए रूढ़ हो (बहुव्रीहि समास) के उदाहरण यौगरूढ़ शब्द कहलाते है।

जैसे :- दशानन, वीणापाणि, जलद, लम्बोदर।

अभिधा शब्द शक्ति के उदाहरण :-

(i) राम पुस्तक पढ़ता है।
(ii) किसान खेत पर हल चलाता है।
(iii) बालक प्रतिदिन विद्यालय जाता है।
(iv) गधा ~~रेंक~~ रेंकता है।
(v) सजना है मुझे सजना के लिए।
(vi) वह तोड़ती पत्थर।
(vii) विद्यार्थी पढ़ रहे है।
(viii) घोड़ा सवारी के काम आता है।
(ix) पुरुष की भीरूता की पुरी निन्दा करते है।
(x) चमेली का पुष्प श्वेत वर्ण का सुगन्धित पुष्प है।

 Youtube- Chalta Smart Study

By Chalia Sir

2. लक्षणा ~~शब्द~~ शब्द शक्ति :-

शब्द - लक्षक अर्थ :- लक्ष्यार्थ

परिभाषा :- मुख्यार्थ में बाध होने पर रूढ़ि अथवा प्रयोजन के कारण जिस शक्ति द्वारा मुख्यार्थ से सम्बन्धित अन्य अर्थ (लक्ष्यार्थ) ग्रहण किया जाता है, उसे लक्षणा शब्द शक्ति कहा जाता है।

जैसे - "मोहन गधा है" (यहाँ गधे का लक्ष्यार्थ है मूर्ख)

राधा तो निरी गाय है। (यहाँ गाय सीधी-सादी अर्थ में)

⇒ लक्षणा शब्द शक्ति के लिए आवश्यक तीन बातें :-

(1) शब्द के मुख्य अर्थ (मुख्यार्थ) में बाधा पड़े -

जैसे - 'गंगा पर घर है' इस वाक्य में 'गंगा पर' शब्द का मुख्यार्थ है - गंगा नदी का प्रवाह, लेकिन जल-प्रवाह पर घर नहीं हो सकता, अतः यहाँ मुख्यार्थ में बाधा है।

(2) शब्द के मुख्य अर्थ से संबंधित कोई अन्य अर्थ लिया जाये -

- मुख्यार्थ में बाधा उपस्थित होने पर लक्ष्यार्थ ग्रहण किया जाता है, लेकिन लक्ष्यार्थ का मुख्यार्थ से सम्बंध होना आवश्यक है। इसी को मुख्यार्थ का योग कहते है। जैसे - "गंगा पर घर है" वाक्य में 'गंगा पर' का लक्ष्यार्थ 'गंगा के तट पर' लिया जाता है।

By Chalia Sir

 youtube - chalia smart study

(3) उस अन्य अर्थ (लक्ष्यार्थ) को ग्रहण करने के पीछे कोई रूढ़ि या विशेष प्रयोजन हो-

⇒ लक्षणा का महत्व -

लक्षणा से व्यक्त होने वाला अर्थ लक्ष्यार्थ कहलाता है और जिस शब्द से यह अर्थ निकलता है उसे लक्षक कहते हैं। अभिधा के द्वारा मुख्य अर्थ व्यक्त होने के बाद ही उससे लक्ष्यार्थ लिया जाता है। इस व्यापार में या तो रूढ़ि रहती है या कोई प्रयोजन रहता है।

जैसे:- (i) वह लड़का शेर है।
(ii) यह लड़की तो गाय है।
(iii) रमेश का घर मुख्य सड़क पर ही है।

- इन वाक्यों में लड़के को शेर कहने से 'शेर' का अर्थ साहसी या वीर लिया गया है।
- लड़की को गाय कहने से 'गाय' का अर्थ 'सीधी सरल' है।
- रमेश का घर मुख्य सड़क अर्थात् सड़क के मध्य में नहीं हो सकता, अतः सड़क के किनारे पर - उससे निकट अर्थ के लिये ऐसा कहा गया है। ये सभी अर्थ लक्षणा शब्द शक्ति से लिये गये है।

⇒ लक्षणा शब्द ~~शब्द~~ शक्ति के भेद - 2

(1) रूढ़ा लक्षणा (2) प्रयोजनवती लक्षणा

By Chalia Sir

 youtube - chalia Smart Study

(1) रूढ़ा लक्षणा :-

जब किसी रूढ़ि या प्रचलन के कारण मुख्यार्थ को छोड़कर कोई अन्य अर्थ ग्रहण किया जाता है, तब वहाँ रूढ़ा लक्षणा मानी जाती है। इसे रूढ़ी लक्षणा कहते है।

जैसे - "राजस्थान वीर है।"

प्रस्तुत वाक्य में 'राजस्थान' का मुख्यार्थ है - राजस्थान राज्य। परन्तु यहाँ इस अर्थ की बाधा है क्योंकि राजस्थान तो जड़ है, वह वीर कैसे हो सकता है? इस स्थिति में इसका यह लक्ष्यार्थ ग्रहण किया जाता है - 'राजस्थान के लोग वीर है।'

<u>अन्य उदाहरण</u> -

(1) <u>महाराष्ट्र</u> साहसी है।
(2) <u>पंजाब</u> शेर है।
(3) यह <u>तेल</u> शीतकाल मे उपयोगी है।
(4) मुँह पर <u>ताला</u> लगा लो।
(5) <u>कलिंग</u> साहसी है।

(2) प्रयोजनवती लक्षणा -

- मुख्यार्थ के बाधित होने पर किसी प्रयोजन के द्वारा अर्थ ग्रहण होने पर प्रयोजनवती लक्षणा होती है।

जैसे :- "श्वेत दौड़ रहा है।"

प्रस्तुत वाक्य में 'श्वेत' का मुख्यार्थ 'सफेद रंग' बाधित है क्योंकि वह दौड़ कैसे सकता है। इसका लक्ष्यार्थ है - श्वेत रंग का घोड़ा

By Chalia Sir

दौड़ रहा है।" अर्थात् किसी घुड़दौड़ प्रतियोगिता के दौरान यह वाक्य बोला जाता है तो श्रोता इसका यह अर्थ ग्रहण कर लेता है कि "सफेद रंग का घोड़ा दौड़ रहा है।" इस प्रकार किसी प्रयोजन विशेष (घुड़दौड़) से यह अर्थ ग्रहण करने के कारण यहाँ प्रयोजनवती लक्षणा है।

अन्य उदाहरण – (i) भाले प्रवेश कर रहे है।
(ii) गंगा तट पर घर है।
(iii) वह स्त्री तो गंगा है।
(iv) लाल पगड़ी आ रही है।

⇒ लक्षणा शब्द शक्ति के अन्य उदाहरण :–

(i) मोहन गधा है।
(ii) बाजार एक जादू है।
(iii) सुरेश हॉकी खेलते समय हवा से बातें करता है।
(iv) राम तो गाय है, उस मत मारो।
(v) कुत्ते तो भौंकते ही रहते है।
(vi) कहीं-कहीं सड़क निर्जन चीड़ के जंगलों से गुजरती है।
(vii) बन्दूकें चलने लगी।
(viii) इयी आस अटक्यौं रहतु, अलि गुलाब के मूल।'
(ix) दृग उरझत टुटत कुटुम, जुरत चतुर चित प्रीति।
परत गाँठ दुरजन हिये दई नई यह रीति॥
(कुटुम टूटना - परिवार बिखरना, परिवार के लोग)

youtube- Chalia Smart Study
By Chalia Sir

3. व्यंजना शब्द शक्ति :-

- जहाँ किसी शब्द का वाच्यार्थ/मुख्यार्थ और लक्ष्यार्थ से भी अर्थ न निकले तब उसका बोध कराने वाली तीसरी शक्ति व्यंजना शब्द शक्ति कहलाती है।

जैसे :- किसी ने अपने साथी से कहा कि -

"संध्याकाल के छः बज गये है" इस वाक्य मे छह बजे के अनेक अर्थ लिए जा सकते है -

1. घर जाने का समय हो गया।
2. मंदिर मे आरती का समय हो गया।
3. गाय के दुहने का समय।
4. खेलने का समय हो गया।

"सूरज डूब गया" - 1. खेत से घर जाने का समय
2. पूजा-पाठ का समय
3. खाना बनाने का समय

⇒ व्यंजना शब्द शक्ति के भेद - 2

(1) शाब्दी व्यंजना (2) आर्थी व्यंजना

(1) शाब्दी व्यंजना -

जहाँ शब्द विशेष के कारण व्यंग्यार्थ का बोध होता है और वह शब्द हटा देने पर व्यंग्यार्थ समाप्त हो जाता है वहाँ शाब्दी व्यंजना होती है।

youtube- Challa Smart Study

By Challa Sir

उदा० - "भयो अपत कै कोप युत कै बौरे यहि काल।
मालिनि आज कहै न क्यों, या रसाल को हाल॥"

(कोई नायिका किसी बगीचे की मालिन से पूछ रही है - उस रसाल (आम) का हाल क्यों नहीं बता रही हो? यह बिना पत्तों वाला क्यों हो गया है? या उसमें कोपलें निकल आई है? या इस समय उसमें बौर निकल आये है।

(दूसरा अर्थ - "हे मालिन! उस रसिक नायक (रसाल) का हाल क्यों नहीं बता रही हो? क्या वह आज प्रतिष्ठाहीन (अपत) हो गया है, या कुपित हो गया है (कोपयुक्त) या पागल (बौरा हो गया है?"

- रसाल, अपत, कोप, बौरो शब्दों के स्थान पर इनके पर्यायवाची रख दे, तो व्यंजित अर्थ ग्रहण नहीं होगा। अतएव यहाँ शाब्दी व्यंजना मानी जाती है।

चिरजीवो जोरी जुरै, क्यों न सनेह गंभीर।
को घटि, ये वृषभानुजा, वे हलधर के वीर॥ (शाब्दी व्यंजना)

(2) आर्थी व्यंजना -

- जब व्यंजना किसी शब्द विशेष पर आधारित न होकर अर्थ पर आधारित होती है, तब आर्थी व्यंजना होती है।

उदा० "सागर कूल मीन तड़पत है हुलसि होत जल पीन।"

यह कथन सामान्यत: कोई महत्व नहीं रखता, परन्तु जब इस बात का पता चल जाता है कि इसको कहने वाली गोपिकाएँ है, तब इसका यह अर्थ निकलता है कि हम कृष्ण के समीप होते हुए भी मछली

के समान तड़प रही है। कृष्ण के दर्शन से हमें वैसा ही आनंद प्राप्त होगा,। जैसा कि मछली को पानी में जाने से होता है।

उदा० - प्राकृतिक सुषमा में कमल तो कमल है।

इस वाक्य में प्रथम 'कमल' शब्द का अर्थ सामान्य रूप से कमल है. परन्तु द्वितीय 'कमल' शब्द का अर्थ सौन्दर्यातिशय है और इसका यह अर्थ व्यंजना के द्वारा व्यक्त हुआ है जो कि काफी चमत्कारी है।

⇒ व्यंजना शब्द शक्ति के उदाहरण -

उदा० - 'ऐनक हो तो कौनसा आपको कुछ दिखाई देता है'।

इस वाक्य में व्यंजना शब्द शक्ति है। इसमें मधु अपने पति बसन्त पर नासमझ होने का व्यंग्य कर रही है, यह अर्थ व्यंजना शब्द-शक्ति से व्यक्त हुआ है।

उदा० - "हाँ, एक तुम ही तो अच्छे आदमी हो।"

"तब नहीं-स्त्री! जाता हूँ. तैमूर का वंशधर स्त्री से छल करेगा।"

youtube-Chalia Smart Study

By Chalia Sir

"अलंकार"

* अनुप्रास (कक्षा-12 अनिवार्य)
* उपमा
* रूपक
* दृष्टान्त
* उत्प्रेक्षा
* उदाहरण
* यमक (हिन्दी अनिवार्य)
* असंगति
* श्लेष (हिन्दी अनिवार्य)
* भ्रांतिमान (हिन्दी अनिवार्य)
* संदेह (हिन्दी अनिवार्य)
* विभावना (हिन्दी अनिवार्य)
* मानवीकरण
* विरोधाभास (हिन्दी अनिवार्य)
* वक्रोक्ति (हिन्दी अ०)
* अतिशयोक्ति (हिन्दी अनिवार्य)

अलंकार : व्युत्पत्ति एवं अर्थ

अलम् + कृ + घञ् (कार)
↓ पर्याप्त
↓ 'अ' शेष

अर्थात् कथन को प्रभावी और आकर्षक ढंग से कहने का भाव संकेतित।

सामान्य अर्थ :- अलंकार → आभूषण

साहित्यिक अर्थ - काव्य की शोभा बढ़ाने वाले तत्व

By Chalia Sir

"अलंकार की परिभाषा"

'अलंकरोति इति अलंकार :- अर्थात् जो उपादान काव्य में अलंकरण का कार्य करते है, वे अलंकार कहलाते हैं।

भामह :- शब्द और अर्थ का वैचित्र्य (वैशिष्ट्य) ही अलंकार है। (काव्यालंकार)

(भामह अलंकार सम्प्रदाय के आदि आचार्य है)

दण्डी :- "काव्यशोभाकरान धर्मान अलंकारान प्रचक्षते" अर्थात काव्य को सौन्दर्य प्रदान करने वाले धर्म ही अलंकार कहलाते है। (काव्यादर्श)

वामन :- "काव्यशोभायाः कर्तारौ धर्माः गुणाः" (काव्यालंकारसूत्र)

अर्थात काव्य की सौन्दर्य-वृद्धि करने वाले धर्म ही अलंकार है।

आचार्य शुक्ल :- "भावों का उत्कर्ष दिखाने और वस्तुओं के रूप, गुण और क्रिया का तीव्र अनुभव करने में कभी-कभी सहायक होने वाली उक्ति ही अलंकार है।"

youtube- chalia smart study

By Chalia Sir

⇒ अलंकार : महत्वपूर्ण तथ्य

* भामह और दण्डी ने काव्य में अलंकारों के महत्व को स्वीकार किया।

* मम्मट ने अलंकारों को काव्य के लिये अनिवार्य नहीं माना।

* जयदेव ने काव्य और अलंकारों का संबंध अग्नि और उष्णता के समान माना।

* केशव ने काव्य में अलंकारों का महत्व निर्विवाद स्वीकार किया है। ↳(कविप्रिया)

जदपि सुजाति (अच्छे गुण) सुलच्छनी (अच्छे लक्षणों वाली) सुबरन (वर्ण), सरस (सरल), सुकत (अच्छा बोलने वाली)
भूषण बिनु न बिराजई कविता, बनिता (स्त्री) मित्त (मित्र)। (कविता-केशवदास)

⇒ अलंकार : भेद :-

* अलंकारों के तीन भेद माने गए हैं:-

* **शब्दालंकार** :- जहाँ अलंकार शब्द पर आधारित हो।

जैसे:- अनुप्रास, यमक, श्लेष, वक्रोक्ति

उदाहरण:- कनक-कनक ते सौगुनी मादकता अधिकाय।

* **अर्थालंकार** :- जहाँ अलंकार अर्थ पर आधारित हो।

जैसे:- उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, संदेह, भ्रान्तिमान, दृष्टान्त उदाहरण,

By Chalia Sir

*** उभयालंकार** :- जहाँ अलंकार शब्द और अर्थ दोनों पर आधारित हो।

जैसे:- 'पुनरुक्तवदाभास'

⇒ ***शब्दालंकार और अर्थालंकार : तुलनात्मक दृष्टि ***

"शब्दालंकार"	अर्थालंकार
· जहाँ चमत्कार शब्द पर आधारित हो।	· जहाँ चमत्कार अर्थ पर आधारित हो।
· शब्द विशेष के स्थान पर समानार्थी शब्द रखने पर चमत्कार समाप्त हो जाता है।	· शब्द विशेष के स्थान पर समानार्थी शब्द रखने पर भी चमत्कार यथावत।
· यमक, श्लेष, पुनरुक्ति प्रकाश, वीप्सा, अनुप्रास प्रमुख शब्दालंकार।	· उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अपन्हुति, असंगति, विरोधाभास प्रमुख अर्थालंकार है।
· शब्दालंकार मुक्तप्रवाही, अर्थालंकार के साथ भी प्रयुक्त।	· एक साथ कभी दो अर्थालंकार नहीं आते।

⇒ शब्दालंकार :- (1) अनुप्रास अलंकार :-

जहाँ एक या अनेक वर्ण दो या दो से अधिक बार एक ही क्रम में रखे जाते है। अर्थात वर्णों की आवृत्ति होती है, भले ही उनमें स्वरों की समानता न हो, तो वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है। जैसे:-

उदा० - "भगवान भक्तों की भयंकर भूरि भीति भगाइये।"

इसमें 'भ' वर्ण अनेक बार आया है, इसलिए अनुप्रास अलंकार है।

Youtube - chalia Smart Study

By Chalia Sir

उदा०-"तरनि-तनूजा-तट-तमाल-तरुवर बहु छाये।"

इसमें 'त' वर्ण की आवृत्ति होने से अनुप्रास अलंकार है।

उदा०-"सघन कुंज छाया सुखद सीतल सुरभि समीर।"
(खुशबू) (हवा)
(सुगंध खुशबू)

उदा०- "भरत-भारती मंजु मराली।"
(भारतीय)

इसमें भ, र और त इन तीनों वर्णों का समूह दो बार आया है।

⇒ अनुप्रास के भेद :- वर्णों की आवृत्ति के आधार पर अनुप्रास के चार भेद माने जाते है।

(क) छेकानुप्रास :- जहाँ कोई वर्ण दो बार आए, अर्थात् वर्ण की एक ही बार आवृत्ति हो, जैसे-

उदा० "कानन कठिन, भयंकर भारी"

इसमें 'क' व 'भ' वर्ण की एक बार आवृत्ति हुई है।

उदा०- सब ओर छटा थी छायी।
उदा०- अति आनन्द, मगन महतारी।

(ख) वृत्यानुप्रास अलंकार :- जहाँ वर्ण दो से अधिक बार आए जैसे-

उदा०- "बिरति बिवेक बिमल बिज्ञाना"।

इसमें 'व' वर्ण की आवृत्ति एक से अधिक बार हुई है।

Youtube- Chalia Smart Study
By Chalia Sir

उदा०- भव्य भावों में भयानक भावना भरना नहीं।

यहाँ 'भ' वर्ण कई बार आया है।

उदा०- चारु चन्द्र की चंचल किरणें खेल रही थीं जल-थल में।

इसमें 'च' व 'ल' वर्ण की आवृत्ति कई बार हुई है।

(ग) श्रुत्यानुप्रास अलंकार:- जहाँ एक ही उच्चारण स्थान वाले अधिक वर्ण हो, जैसे:-

उदा० "तुलसीदास सीदत निस-दिन देखत तुम्हारि निठुराई।"

इसमें 'त' 'स' आदि वर्ण एक ही उच्चारण स्थान अर्थात 'दंत्य' वर्ण है, इनकी आवृत्ति हुई है।

उदा०- दिनांत था, थे दिननाथ डूबते।

इसमें दंत्य अक्षर द, न, त थ आदि वर्ण की आवृत्ति हुई है।

(घ) अन्त्यानुप्रास अलंकार:- छन्द के अन्त में स्वरों की आवृति हो

जैसे:- "तज प्राणों का मोह आज सब मिलकर आओ।
मातृ-भूमि के लिए बंधुवर! अलख जगाओ॥"

इसमें छन्द के चरणों के अन्त में समान स्वरों की आवृत्ति हुई है।

उदा०- नभ लाली, चाली निसा, चटकाली धुनि कीन।

इसमें में समान स्वरों की आवृत्ति हुई है।

By Chalia Sir

उदा०- "दुखी बना मंजु-मना ब्रजांगना"

यहाँ बना, मना और ब्रजांगना शब्दों के अन्त में बीच के व्यंजन 'न' के सहित अन्त के दो स्वरों (अ, आ) की आवृत्ति हुई है।

उदा०- "जिसने हम सबको बनाया, बात-की-बात में वह कर दिखाया
कि जिसका भेद किसी ने न पाया"।

यहाँ बनाया, दिखाया और पाया शब्दों के अन्त में बीच के व्यंजन 'य' के सहित अन्त के दो स्वरों (आ, आ) की आवृत्ति हुई है।

शब्दालंकार :- (2) यमक अलंकार

परिभाषा :- काव्य में जहाँ एक शब्द की दो या अधिक बार आवृत्ति हो तथा प्रत्येक आवृत्ति में भिन्न अर्थ हो वहाँ यमक अलंकार होता है।

उदा०- "कनक-कनक ते सौगुनी मादकता अधिकाय,
या खाये बौराय नर, वा पाये बौराय।"

इस उदाहरण में 'कनक' शब्द की दो बार आवृत्ति हुई है, जिनका क्रमश: अर्थ स्वर्ण तथा धतूरा है। अत: यमक अलंकार है।

उदा०- "गुनी गुनी सब के कहे, निगुनी गुनी न होत।
सुन्यौ कहूँ तरु अरक ते, अरक समानु उदोत ॥"

By Chalia Sir

इसमे 'गुनी शब्द की एक ही अर्थ है में आवृत्ति हुई है, परंतु 'अरक' शब्द एक बार "आकड़े के पौधे" के लिए ~~बार~~ तथा दूसरी बार 'सूर्य' के लिए आया है।

⇒ यमक अलंकार के भेद :-

यमक अलंकार के दो भेद माने गए हैं-

(1) सभंग अलंकार (2) अभंग अलंकार

(1) सभंग यमक अलंकार - काव्य में जहाँ शब्दांश की आवृत्ति होती है तथा अर्थ भिन्न होता है वहाँ सभंग यमक अलंकार होता है।

उदा० - "कर का मनका छाँड़ि के, मन का मनका फेर"

इस उदाहरण में 'मनका' और 'मन का' शब्दांश की आवृत्ति हुई है तथा अर्थ भिन्न है। अतः सभंग यमक अलंकार है।

उदा० - "तौं पर वारौं उरबसी, सुनि राधिके सुजान।
तू मोहन के उर बसी, है उरबसी समान ॥"

इसमें 'उरबसी' (उर्वशी) और 'उर बसी' में पद को तोड़कर आवृत्ति की गई है।

नोट :- सभंग यमक अलंकार में कोई शब्द सार्थक और कोई शब्द निरर्थक हो सकता है।

By Chalia Sir

(2) अभंग यमक अलंकार :- काव्य में जहाँ पूर्ण शब्द की आवृत्ति होती है तथा अर्थ भिन्न होता है, वहाँ अभंग यमक अलंकार होता है।

उदा० - "खग - कुल कुल - कुल - सा बोल रहा,
किसलय का अंचल डोल रहा।"

इसमें 'कुल' शब्द की आवृत्ति हुई है तथा अर्थ भिन्न है। पहले 'कुल' का अर्थ <u>समूह</u> या <u>परिवार</u> है तथा दूसरे 'कुल-कुल' का अर्थ "<u>कलरव</u>" है। अत: अभंग यमक अलंकार है।

उदा० - "तीन बेर खाती थी वो तीन बेर खाती है।
नगन जड़ाती थी वो नगन जड़ाती है॥"

इसमे 'तीन बेर' दो बार व 'नगन जड़ाती' दो बार आया है और इनका अर्थ भिन्न-भिन्न है, इस कारण अभंग यमक अलंकार होगा।

1. तीन बेर - तीन बार खाना, 2. तीन बेर - एक फल
1. नगन जड़ाती - हीरा, मोती, रत्न 2. नगन जड़ाती - वस्त्रों के बिना

उदा० - "तुम <u>तारे</u> तेते नभ में न <u>तारे</u> हैं।"

[तारे - उद्धार करना , तारे - तारागण]

youtube - Chalia Smart Study

By Chalia Sir

⇒ शब्दालंकार : श्लेष अलंकार

परिभाषा :- काव्य में जहाँ शब्द का एक बार प्रयोग हो किन्तु भिन्न-भिन्न अर्थ का बोध हो, वहाँ श्लेष अलंकार होता है।

उदा०- "रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून,
पानी गये न ऊबरै मोती मानुस चून।"

यहाँ 'पानी' शब्द में श्लेष अलंकार है, क्योंकि मोती के सन्दर्भ में पानी का अर्थ 'चमक' है, मनुष्य के संदर्भ में पानी का अर्थ 'इज्जत' इसी प्रकार चूने के सन्दर्भ में पानी का अर्थ 'जल' है। इस प्रकार 'पानी' एक शब्द का अनेक अर्थों में प्रयोग किया गया है।

उदा०- "बलिहारी नृप कूप की, गुन बिन ~~बि~~ बून्द न देइ।"

इस पंक्ति में 'गुन' शब्द में श्लेष अलंकार है। गुन शब्द के यहाँ दो अर्थग्रहण किए गए है। नृप (राजा) के पक्ष में 'गुन' का अर्थ - गुण या विशिष्टता तथा 'कूप' (कुएँ) के पक्ष में 'गुन' का अर्थ है - 'रस्सी'। अत: यहाँ श्लेष अलंकार है।

⇒ श्लेष अलंकार के भेद :-

श्लेष अलंकार के दो भेद माने गए है :-

(1) सभंग ~~है~~ श्लेष (2) अभंग श्लेष

By Chalia Sir

(1) सभंग श्लेष अलंकार :- जहाँ शब्द के टुकड़े करने से एक से अधिक अर्थ निकले. वहाँ संभग श्लेष अलंकार होता है।

जैसे :- "अजौं तर्यौना ही रह्यौ, श्रुति सेवक इक अंग।"

यहाँ 'तर्यौना' में संभंग श्लेष अलंकार है। एक पक्ष में 'तर्यौना' का अर्थ 'कान का आभूषण' है और दूसरे पक्ष में 'तर्यौना' का अर्थ तरा नहीं अर्थात् निकृष्ट जीव है। दूसरा अर्थ 'तर्यौं + ना' खण्ड करने पर ही प्राप्त होता है।

उदा० - "को घटि ये वृषभानुजा, वे हलधर के बीर।"

इसमें वृषभानु + जा (पदभंग करने पर) = राधा

वृषभ + अनुजा = गाय (बैल) का अर्थ निकलता है)

इसी प्रकार हलधर का बलराम व बैल अर्थ निकल रहा है।

(2) अभंग श्लेष अलंकार :- जहाँ शब्द के टुकड़े किए बिना ही उससे कई अर्थ निकलें वहाँ 'अभंग श्लेष अलंकार' होता है।

उदा०- नवजीवन दो घनश्याम हमें।

(नया जीवन - जल) (बादल, कृष्ण)

इसमें 'नवजीवन' तथा 'घनश्याम' शब्दों में अभंग श्लेष है क्योंकि ब्रज क्षेत्र और वर्षाऋतु के सन्दर्भ में इनके भिन्न - भिन्न अर्थ ग्रहण किये जा रहे हैं।

youtube- Chalia Smart Study
By Chalia Sir

उदा०- "सुबरन को ढूँढत फिरै, कवि, कामी अरु चोर।"

इसमें सुबरन शब्द ~~के~~ है, इसमें सुन्दर अक्षर (कवि के साथ)
सुन्दर रूप (कामी के साथ)
सोना (चोर के साथ) अर्थ लिया गया है।

⇒ अर्थालंकार : उपमा

उप + मा = समीप रखकर मांप तौल करना।

परिभाषा :- काव्य में जहाँ किसी वस्तु के रूप, रंग, गुण अथवा क्रिया आदि गुणों के आधार पर उसकी किसी अन्य वस्तु से तुलना की जाती है, वहाँ उपमा अलंकार होता है।

उदा०- "पीपर पात सरिस मन डोला"
(समान)

(1) उपमेय – मन
(2) उपमान – पीपर पात
(3) साधारण धर्म – डोला
(4) वाचक शब्द – सरिस

⇒ उपमा अलंकार के अंग :-

(1) उपमेय ↓ जिसकी तुलना की जाए

(2) उपमान ↓ जिससे तुलना की जाए

(3) साधारण धर्म ↓ जिस गुण के कारण तुलना की जाए

(4) वाचक शब्द ↓ जिन शब्दों से तुलना की जाए

Youtube- Chalia Smart Study
By Chalia Sir

⇒ उपमा अलंकार : वाचक शब्द

सा, सी, सम, इव, सरिस, ज्यों, लौं, समान, जैसे

⇒ उपमा अलंकार के ~~तीन~~ दो भेद माने जाते है।

(1) पूर्णोपमा अलंकार - 4 अंग होते है।

(2) लुप्तोपमा अलंकार - 1, 2 अंग लुप्त

× ~~(3) मालोपमा अलंकार - उपमेय एक उपमान अनेक।~~

By Chalia Sir

(1) पूर्णोपमा अलंकार :- परिभाषा :- जिस काव्यांश में उपमा के चारों अंग अर्थात उपमेय, उपमान, साधारण धर्म और वाचक शब्द विद्यमान हों, वहाँ पूर्णोपमा अलंकार होता है।

उदा० - उषा सुनहले तीर बरसती।
जयलक्ष्मी-सी उदित हुई।

उपमेय - उषा
उपमान - जयलक्ष्मी
वाचक शब्द - सी
साधारण धर्म - सुनहले

(2) लुप्तोपमा अलंकार :- काव्य में जहाँ उपमा के चारों अंग उपस्थित न हों तथा उनमें से एक, दो अथवा तीन अंगों का लोप हो, वहाँ लुप्तोपमा अलंकार होता है।

उदा० - "तापस-बाला-सी गंगा"

उपमेय – गंगा
उपमान – तापस – बाला
वाचक शब्द – सी
साधारण धर्म – ?

उदा० – "मुख कमल जैसा है।"

उपमेय – मुख उपमान – कमल,

वाचक शब्द – जैसा, साधारण धर्म – ?

उदा० – "कुन्द इन्दु सम देह"
(कनेर का फूल) (चन्द्रमा) (शरीर)

उपमेय – देह उपमान – कुन्द इन्दु
साधारण धर्म – लुप्त वाचक शब्द – सम

⇒ अर्थालंकार :– रूपक अलंकार

परिभाषा :– काव्य में जहाँ उपमेय पर उपमान का अभेद आरोप हो, वहाँ रूपक अलंकार होता है।

उदा० – "मुख कमल है"

– मुख पर कमल का आरोप किया गया है।

उदा० – चरन-सरोज पखारन लगा।
(कमल) (धोना, साफ करना)

(उपमेय-उपमान का अभेद आरोप)

By Chalia Sir

⇒ रूपक अलंकार के भेद :- तीन भेद

(i) सांग रूपक
(ii) निरंग रूपक
(iii) परम्परित रूपक

(i) सांग रूपक :- जहाँ उपमेय के अंगों पर उपमान के अन्य अंगों का भी आरोप किया जाता है, सांग रूपक अलंकार होता है। जैसे:-

उदा०- " उदित उदयगिरि -मंच पर, रघुवर बाल -पतंग ।
विकसे संत- सरोज सब, हरषे लोचन - भृंग ।।"

उपमेय	उपमान
सीता का स्वयंवर मंच	उदयगिरि
रघुवर (राम)	बाल-पतंग (बाल सूर्य)
संत	सरोज (कमल-वन)
लोचन	भृंग (भ्रमर)

उदा०- " बीती विभावरी जाग री ।
अम्बर -पनघट में डुबो रही तारा - घट उषा नागरी ।"

उपमेय	उपमान
नागरी (नगर में रहने वाली) -	उषा
घट	तारा
पनघट	अम्बर

Youtube- Chalia Smart Study

By Chalia Sir

(2) निरंग रूपक :- निरंग रूपक शुद्ध रूपक है, जहाँ केवल उपमेय पर ही उपमान का आरोप किया जाता है वहाँ निरंग रूपक अलंकार होता है।

उदा० - "चरण कमल मृदु मंजु तुम्हारे।"

प्रस्तुत पद केवल एक जगह (चरण-कमल अर्थात् कमल रूपी चरण) रूपक अलंकार है।

उदा० - "पायो री मैंने राम रतन धन पायो।"

(उपमेय - धन , उपमान - राम)

(3) परम्परित रूपक :- जहाँ एक रूपक दूसरे का कारण हो, अर्थात् दो रूपक एक-साथ आते हों, एक रूपक मुख्य रूप में और दूसरा गौण रूप में। ~~जैसे~~ -

परिभाषा-2 - काव्य में जहाँ एक रूपक दूसरे रूपक से परंपरानुसार बँधा हुआ हो, वहाँ परम्परित रूपक अलंकार होता है।

उदा० - "बढ़त-बढ़त सम्पति-सलिल, मन सरोज बढ़ि जाय।"

इसमें 'मन' को 'सरोज' मानने का कारण 'सम्पति' को 'सलिल' मानना है।

उदा० - "उदयो ब्रज-नभ आई, यह हरि-मुख मधुर मयंक"

उपमेय - ब्रज, हरि-मुख → श्री कृष्ण का मुख
उपमान - नभ, मयंक → चन्द्रमा

By Chalia Sir

प्रस्तुत उदाहरण में 'ब्रज-नभ' रूपक 'हरि-मुख-मधुर मयंक' रूपक से परम्परानुसार बँधा हुआ है। अतः परम्परित रूपक अलंकार है।

⇒ उपमा और रूपक अलंकार में अन्तर -

उपमा अलंकार	रूपक अलंकार
(1) उपमा अलंकार में उपमेय व उपमान पृथक-पृथक दिखाई देते है।	(1) रूपक अलंकार में उपमेय पर उपमान का आरोप होता है।
(2) उपमा अलंकार में वाचक शब्दों का प्रयोग होता है।	(2) इसमें वाचक शब्दों की आवश्यकता नहीं होती है।
(3) इसमें उपमेय-उपमान में अभेद नहीं होता है।	(3) इसमें उपमेय-उपमान में अभेद स्थापित हो जाता है।
(4) इसमें सामासिक पदों का प्रयोग नहीं होता है।	(4) इसमें सामासिक पदों का प्रयोग होता है।

By Chalia Sir

⇒ अर्थालंकार :- उत्प्रेक्षा अलंकार

'उत्प्रेक्षा' शब्द का अर्थ है- ~~विशे~~ विशेष दृष्टि से देखना।

- जहाँ उपमेय और उपमान में भेद होते हुए भी उपमेय ~~और~~ में उपमान की सम्भावना व्यक्त की जाए, वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है।

उदा०- "मुख मानो चन्द्रमा है।"

वाचक शब्द - मनु, जनु, मानहु, जानहु, जानो, जनहुँ, मानो, मनो आदि।

उदा०- "अम्बर में तारे <u>मानो</u> मोती अनगन हैं।"

तारों में अनगिनत मोती होने की बलपूर्वक संभावना व्यक्त की गई है।

अतः उत्प्रेक्षा अलंकार है।

⇒ उत्प्रेक्षा अलंकार के भेद :- तीन भेद माने गए हैं।

(i) ~~वस्तु~~ वस्तूत्प्रेक्षा (ii) हेतूत्प्रेक्षा (iii) फलोत्प्रेक्षा

(i) वस्तूत्प्रेक्षा :- जहाँ एक वस्तु अर्थात उपमेय में दूसरी वस्तु अर्थात उपमान की संभावना की जाए, वहाँ वस्तूत्प्रेक्षा अलंकार होता है। जैसे-

उदा०- "वह देखो, वन के अन्तराल से निकले।
मानो दो तारे क्षितिज जाल से निकले॥"

उपमेय - भरत, शत्रुघ्न, वन के अन्तराल
उपमान - दो तारे, क्षितिज जाल

Youtube- chalia Smart Study

By Chalia Sir

इसमें उपमेय भरत शत्रुघ्न में उपमान (वस्तु) दो तारे तथा वन अंतराल में क्षितिज-जाल (वस्तु) के होने की संभावना की गई है। अत: वस्तूत्प्रेक्षा अलंकार है।

उदा०- "सोहत ओढ़े पीत पट, स्याम सलौने गात।
मनो नीलमणि सैल पर, आतप पर्‌यौ प्रभात॥"

यहाँ पीताम्बर पहने हुए श्री कृष्ण के श्याम शरीर (उपमेय) में नीलमणि के पर्वत (उपमान) पर प्रात:कालीन धूप पड़ने की संभावना की गई है।

(2) हेतूत्प्रेक्षा अलंकार :- जहाँ अहेतु में हेतु की संभावना की जाए, वहाँ हेतूत्प्रेक्षा अलंकार होता है, अर्थात् जो जिनका कारण न हो उसे बलपूर्वक कारण मान लिया जाए। जैसे :-

"मनो कठिन आँगन चली, ताते राते पाँय।"

यहाँ नायिका के पैर प्रकृति-प्रदत्त लाल (राते) है, यहाँ कवि ने लाल होने का कारण कठिन आँगन पर चलना सम्भावित करता है, जो वास्तव में कारण व हेतु नहीं है।

(3) फलोत्प्रेक्षा अलंकार :- काव्य में जहाँ अफल में फल के होने की संभावना की जाती है, वहाँ फलोत्प्रेक्षा अलंकार होता है।

उदा०- "तरनि तनूजा तट तमाल तरूवर बहु छाये।
झुके फूल सों जल परसन हित मनहुँ सुहाये॥"

यमुना तट पर तमाल के छायादार वृक्ष किनारे पर झुके हुए है मानो उनका उद्देश्य यमुना नदी के जल का स्पर्श करना हो।

Youtube- Chalia Smart Study
By Chalia Sir

- असंभव फल क्योंकि जड़ पदार्थों का कोई भी कार्य किसी फल की प्राप्ति अथवा उद्देश्य से नहीं होता।

⇒ उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा : तुलनात्मक दृष्टि

उपमा	रूपक	उत्प्रेक्षा
(1) गुण धर्म की समानता के कारण उपमेय की उपमान से तुलना।	(1) उपमेय पर उपमान का अभेद आरोप	(1) उपमेय मे उपमान के होने की संभावना
(2) वाचक शब्दों का प्रयोग	(2) वाचक शब्दों का अभाव	(2) वाचक शब्दों का प्रयोग
(3) उपमेय और उपमान पृथक - पृथक	(3) उपमेय और उपमान एक।	(3) उपमेय और उपमान पृथक-पृथक।

⇒ उदाहरण अलंकार -

परिभाषा - काव्य में जब एक बात कहकर उसकी पुष्टि के लिये कोई उदाहरण प्रस्तुत किया जाता है, वहाँ उदाहरण अलंकार होता है।

उदा० - "मन मलीन तन सुन्दर कैसे। विष-रसभरा कनक घट जैसे॥"

- मन मलिन होने पर सुन्दर शरीर का महत्व क्षीण हो जाता है, जैसे सोने के घड़े में मदिरा या विषरस भरा होने से स्वर्ण-घट का महत्व घट जाता है।

By Chalia Sir

उदा०-"नीकी पै फीकी लगै, बिन अवसर की बात।
जैसे बरनत जुद्ध मे नहीं सिंगार सुहात ॥"

यहाँ बिना अवसर की बात की व्यर्थता की पुष्टि के लिये युद्ध मे श्रृंगार वर्णन की व्यर्थता का उदाहरण प्रस्तुत किया गया है। अतः यहाँ उदाहरण अलंकार है।

उदा०- "सुख बीते दुख होत है, दुख बीते सुख होत।
दिवस गये ज्यों निसि उदित, निसि गत दिवस उदोत ॥"

- सुख बीते जाने पर दुःख होता है और दुःख बीते जाने पर सुख होता है जैसे दिन बीत जाने पर रात होती है. और रात बीत जाने पर दिन होता है।

By Chalia Sir

⇒ अर्थालंकार : विरोधाभास अलंकार

परिभाषा :- काव्य मे जहाँ वास्तविक विरोध न होते हुए भी विरोध का आभास प्रतीत हो, वहाँ विरोधाभास अलंकार होता है।

उदा०-"सुधि आये सुधि जाय।"

- प्रियतम की सुधि (याद) आने पर सुधि अर्थात सुध-बुध या चेतना चली जाती है। यहाँ सुधि आने पर सुधि चली है- ऐसा कहने पर विरोध-सा प्रतीत हो रहा है, परन्तु अर्थ करने पर वास्तविक विरोध नहीं है।

उदा० - "मीठी लगै अँखियान लुनाई।"

आशय यह है कि आँखों का लावण्य मीठा प्रतीत होता है। लुनाई का शब्दार्थ है लवणयुक्त अर्थात् खारा/खारापन यहाँ मीठा लग रहा है, यह विरोध कथन है परन्तु लुनाई का तात्पर्य यहाँ पर सुन्दरता के रूप में प्रकट होने से विरोध समाप्त हो गया है।

उदा० - "या अनुरागी चित्त की गति समुझै नहीं कोय।
ज्यों-ज्यों बूड़े स्याम-रंग त्यौं-त्यौं उज्जलु होय॥"

इस उदाहरण में श्याम रंग में डूबने पर उज्ज्वल होने की बात कही गई है, जबकि व्यावहारिक जगत में श्याम रंग में डूबने पर वस्तु या व्यक्ति काला यानी श्याम ही होता है, उज्ज्वल नहीं। अतः वास्तविक न होते हुए भी विरोध का आभास होने के कारण विरोधाभास अलंकार है।

⇒ अर्थालंकार : सन्देह अलंकार

परिभाषा :- जब किसी पद में समानता के कारण उपमेय में उपमान का सन्देह उत्पन्न हो जाता है और यह सन्देह अन्त तक बना रहता है तो वहाँ सन्देह अलंकार माना जाता है।

वाचक शब्द - कि, किधौं, या, अथवा।

उदा० - "सारी बीच नारी है कि नारी बीच सारी है।
सारी ही की नारी है कि नारी ही की सारी है॥"

- यह साड़ी के बीच नारी (द्रौपदी) है या नारी के बीच साड़ी है अथवा साड़ी नारी की बनी हुई है या नारी साड़ी से निर्मित है।

इस प्रकार अन्त तक संशयात्मक स्थिति उत्पन्न होने के कारण यहाँ सन्देह अलंकार है।

 Youtube - Chalia Smart Study

By Chalia Sir

उदा०- "ये है सरस ओस की बूँदें या है मंजुल मोती ॥"

प्रस्तुत पद में हंसिनी अपने सामने छायी ओस की बूँदें को देखती है, परन्तु सादृश्यता (समानता, तुलना) के कारण वह यह निर्णय नहीं कर पा रही है कि ये "ओस की बूँदें" है अथवा सुन्दर मोती है। इस प्रकार अंत तक संशय बने रहने के कारण यहाँ संदेह अलंकार है।

⇒ अर्थालंकार : भ्रांतिमान अलंकार

<u>परिभाषा</u> :- काव्य में जब सादृश्य के कारण उपमेय में उपमान के होने का भ्रम हो जाये तब भ्रांतिमान अलंकार होता है।

<u>उदा०-</u> "ओस बिन्दु चुग रही हंसिनी मोती उनको जान।"

प्रस्तुत पद में हंसिनी को ओस बिन्दुओ (उपमेय) में मोती (उपमान) का भ्रम उत्पन्न हो रहा है, अर्थात् वह ओस की बूँदो को मोती समझकर चुग रही है, अतएव यहाँ भ्रांतिमान अलंकार है।

<u>उदा०</u> - नाक का मोती अधर की कान्ति से
बीज दाड़िम का समझ कर भ्रान्ति से
देख कर सहसा हुआ शुक मौन है
सोचता है अन्य शुक यह कौन है ?

- यहाँ नाक के आभूषण के मोती में अनार (दाडिम) के बीच का भ्रम उत्पन्न हो रहा है, अत: यहाँ भ्रांतिमान अलंकार है।

⇒ संदेह और भ्रांतिमान : अलंकार में अन्तर

:- संदेह और भ्रांतिमान :- संदेह में उपमेय और उपमान के मध्य अनिश्चय की स्थिति बनी रहती है जबकि भ्रांतिमान अलंकार में उपमेय में उपमान के होने का भ्रांतिवश निश्चय हो जाता है।

- यह मुख है या चन्द्रमा ? (संदेह अलंकार)
- यह तो चन्द्रमा है। (भ्रांतिमान अलंकार)

⇒ अर्थालंकार : असंगति अलंकार -

परिभाषा :- काव्य में जब एक ही समय में कारण एक स्थान पर तथा कार्य किसी अन्य स्थान पर घटित होता है वर्णित हो, वहाँ असंगति अलंकार होता है।

उदा० - "हृदय - घाव मेरे पीर रघुवीरे।"

इस उदाहरण में लक्ष्मण के शक्ति लगने पर श्रीराम के हृदय में पीड़ा होने का वर्णन किया गया है अर्थात् पीड़ा का कारण कहीं है और पीड़ा होने का कार्य कहीं और सम्पन्न हो रहा है। अतः असंगति अलंकार है।

उदा० - "सीतहिं लै दस्कंध (रावण) गयो
पै गयो है बिचारो समुन्दर बाँध्यो।"

इस उदाहरण में रावण के द्वारा सीताजी का हरण करने एवं समुन्द्र को बाँधने का चित्रण किया गया है, अर्थात् कारण और कार्य अलग-अलग स्थानों पर सम्पन्न हो रहे है। अतः असंगति अलंकार है।

Youtube- Chalia Smart Study

By Chalia Sir

उदा०- "दृग ~~उरझ~~ उरझत टूटत कुटुम, जुरत चतुर चित्त प्रीति।
परत गाँठ दुरजन हिये, दई नई यह रीति।"

उदा०- "राज देन कहँ सुभ दिन साधा।
कह्यो जान बन केहि अपराधा ॥"

> ⇒ अर्थालंकार :- दृष्टान्त अलंकार

परिभाषा :- काव्य में जब पहले एक बात कहकर फिर उससे मिलती-जुलती बात पहली बात के उदाहरण के रूप में इस प्रकार कही जाये कि दोनों वाक्यों में बिम्ब-प्रतिबिम्ब भाव हो जाए, तब दृष्टान्त अलंकार होता है।

दृष्टान्त अलंकार में दो वाक्य -

(1) उपमेय वाक्य (2) उपमान वाक्य

उदा०- "करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जात ते सिल पर पड़त निसान ॥"

उपमेय कथन :- बार-बार अभ्यास करने से मुर्ख व्यक्ति भी विद्वान बन जाता है।

उपमान कथन :- बार-बार रस्सी के आने जाने से चट्टान पर भी निसान पड़ जाते है।

इस प्रकार दोनों कथन बिम्ब-प्रतिबिम्ब रूप में जुड़कर एक जैसा भाव प्रकट करने के कारण यहाँ दृष्टान्त अलंकार माना जाता है।

उदा०- "धन वाले घर में ही जाती, कभी न जाती निर्धन घर में।
जलनिधि में गंगा गिरती, कभी न गिरती सूखे सर में ॥"

⇒ अर्थालंकार : विभावना अलंकार

परिभाषा :- काव्य में जहाँ कारण के न होने पर भी कार्य का होना वर्णित किया जाये, वहाँ विभावना अलंकार होता है।

उदा० :- "बिनु पद चलै सुनै बिनु काना ।
कर बिनु कर्म करै विधि नाना ॥"

इस उदाहरण में ब्रह्म के बिना पैरों के चलने, बिना कानों के सुनने, बिना हाथों के कार्य करने का वर्णन ~~जाता~~ है गया है अर्थात् बिना कारण के ही कार्य संपन्न हो रहा है। अतः विभावना अलंकार है।

उदा०- "निंदक नियरे राखिए आँगन कुटी छवाय।
बिन पानी साबुन बिना निर्मल करै सुभाय ॥"

उदा०- "देखो नील कमल से कैसे, तीखे तीर बरसते हैं।"

⇒ मानवीकरण अलंकार :-

परिभाषा :- जहाँ अमानव पदार्थों (निर्जीव वस्तुओं) पर मानव सुलभ गुणों और क्रियाओं का आरोप किया जाता है, वहाँ मानवीकरण अलंकार होता है।

उदा०- दिवसावसान का समय
मेघमय आसमान से
उतर रही
संध्या सुन्दरी परी सी
धीरे-धीरे-धीरे।

Youtube - Chalia Smart Study
By Chalia Sir

यहाँ संध्या (अमूर्त पदार्थ) पर सुंदरी (मूर्त पदार्थ) के मानवीय गुणों का आरोप किया गया है। अतः मानवीकरण अलंकार है।

उदा० - "ऊषा उदास आती है।
मुख पीला ले जाती है॥"

उदा० - "चुपचाप खड़ी थी वृक्ष-पांत।
सुनती जैसे कुछ निजी बात॥"

⇒ वक्रोक्ति अलंकार :-

परिभाषा :- जहाँ पर वक्ता के द्वारा बोले गए शब्दों का श्रोता अलग अर्थ निकालता है, तो उसे वक्रोक्ति अलंकार कहते हैं। वक्रोक्ति का अर्थ 'वक्र उक्ति' अर्थात् 'टेढ़ी उक्ति' होता है। (कहने वाले का अर्थ कुछ और होता है, लेकिन सुनने वाला उससे कुछ दूसरा अर्थ निकाल लेता है।)

उदाहरण :- भिक्षुक गो कित को गिरजे।
सो तो माँगन को बलिद्वार गयो री॥
है पशुपालन कहाँ सजनी!
जमुना-तट धेनु चराय रहो री।

माता लक्ष्मी कहती है कि वह ~~पशुपति~~ पशुपाल (पशुपति = शिव का नाम) कहाँ है? माता पार्वती पशुपाल का दूसरा अर्थ पशुओं का पालक कल्पित करके उत्तर देती है कि यमुना-तट के किनारे गायें चरा रहा होगा (विष्णु कृष्णावतार में यमुना-तट पर गायें चराते थे।)

Youtube- Chalia Smart Study

By Chalia Sir

उदा० २. कौन द्वार पर ? हरि मैं राधे !
क्या वानर का काम यहाँ ?

राधा भीतर से पूछती है कि बाहर तुम कौन हो ? कृष्ण उत्तर देते हैं कि राधे मैं हरि हूँ। राधा हरि का अर्थ कृष्ण न लगाकर वानर लगाती है और कहती है कि इस नगर में वानर का क्या काम ? कृष्ण द्वारा एक अर्थ में कहे गये 'हरि' शब्द का राधा दूसरा अर्थ 'वानर' कल्पित करती है।

⇒ वक्रोक्ति अलंकार के भेद :- दो भेद

(1) काकु वक्रोक्ति :- जब वक्ता के द्वारा बोले गए शब्दों का उसकी कंठ ध्वनि के कारण श्रोता कुछ और अर्थ निकलता है, तो वहाँ पर 'काकु वक्रोक्ति अलंकार' होता है।

उदा० - कौन द्वार पर, राधे मैं हरि।
क्या कहा यहाँ ? जाओ वन में।

उदा० - कौन तुम ? मैं घनश्याम।
तो बरसो कित जाय ॥

(2) श्लेष वक्रोक्ति अलंकार - जहाँ पर श्लेष की वजह से वक्ता के द्वारा बोले गए शब्दों का अलग अर्थ निकाला जाता है, तो वहाँ 'श्लेष वक्रोक्ति अलंकार' होता है।

उदा० - को तुम हौ इत आये कहाँ घनस्याम हौ तो कितहूँ बरसो।
चितचोर कहावत हैं हम तो तहां जाहुं जहाँ घन सरसों ॥

By Chalia Sir

⇒ अतिशयोक्ति अलंकार -

परिभाषा:- जब किसी वस्तु, व्यक्ति आदि का वर्णन बढ़ा-चढ़ा -कर किया जाए तब वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है। इस अलंकार में असंभव तथ्य बोले जाते हैं।

जैसे:- उदा०- हनुमान की पूँछ में लगन न पाई आग,
लंका सिगरी जल गई गए निशाचर भाग।

इस उदा० में कहा गया है कि हनुमान की पूँछ में आग लगने से पहले ही पूरी लंका जलकर राख हो गयी और सारे राक्षस भागे खड़े हुए।

यह बात बिलकुल असंभव है एवं लोक सीम से बढ़कर वर्णन किया गया है। अत: यह उदाहरण अतिशयोक्ति अलंकार का है।

उदा०- आगे नदियाँ पड़ी अपार घोड़ा कैसे उतरे पार।
राणा ने सोचा इस पार तब तक चेतक था उस पार॥

इसमें महाराणा प्रताप के सोचने की क्रिया खत्म होने से पहले ही चेतक ने नदियाँ पार कर लीं।

इसमें बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन के कारण अतिशयोक्ति अलंकार है।

By Chalia Sir